# 'राग' 'रस' एवं 'चित्रपट संगीत'

**डॉ. मधु शर्मा**
विभागाध्यक्षा, संगीत (गायन)
सनातन धर्म महाविद्यालय, अम्बाला छावनी

भारत में संगीत की बहुत प्राचीन एवं पुरातन परम्परा मानी गई है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक भारतीय संगीत अपने श्रोताओं को आनन्द की अनुभूति करवा रहा है। समय-समय पर हुए परिवर्तनों ने भारतीय संगीत को और अधिक समृद्ध बना दिया है। वैदिक काल के साम गान से लेकर मध्यकाल के ख्याल गायन और आधुनिक युग के चित्रपट संगीत तक भारतीय संगीत में बहुत प्रगति हुई है। संगीत 'साहित्य' और 'समाज' तीनों में बहुत गहरा संबध देखा जा सकता है। समय के अनुसार सामाजिक परिस्थितियों में हुए परिवर्तन से साहित्य और संगीत दोनों में भी परिवर्तन हुआ है।

राग संगीत से अनेक प्रकार के रस उत्पन्न होते हैं। 'रस परिपाक' संगीत के अनेक फूलों में से एक है। प्राचीन समय में जाति गायन का प्रचलन था अत: किसी भी जाति में भिन्न-भिन्न स्वरों को आधार मानकर भिन्न-भिन्न प्रभाव उत्पन्न करना उस समय के गायकों की विशेषता थी। हमारे संगीत में प्रत्येक राग अपना विशेष स्थान रखता है। हर राग की अपनी प्रकृति है और रागों की प्रकृति के अनुसार एक विशेष रस की उत्पत्ति होती हैं जैसे कि राग 'चारूकेशी' करुण रस का राग है। राग 'गोरख कल्याण' शांत रस वहीं दूसरी तरफ भैरव गंभीर प्रकृति का राग है। राग एक सुगंधित पुष्प के समान है। उससे मन को अवर्णनीय आनन्द मिलता है। मन प्रफुल्लित होता है। राग के मनमोहक गायन या वादन से मन पर प्रभाव अवश्य ही पड़ता है।

**"रस"**

रस का शाब्दिक अर्थ है 'आनन्द'। किसी भी गीत, गजल को या किसी विशेष धुन को सुनकर जो आनन्द प्राप्त होता है उसे रस कहा जाता है। 'रस' मुख्य

रूप से काव्य का विषय है। 'रस' का संबध साहित्य से माना जाता है। रस का काव्य को आत्मा माना जाता है। 'भरत मुनि' ने अपने ग्रंथ नाट्यशास्त्र में रस की परिभाषा इस प्रकार दी है:-

*"विभावानुभाव व्यभिचारी-संयोगद्रस निष्पत्ति"*

अर्थात विभाव, अनुभव तथा संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति हुई है।

'रस' की परिभाषा सर्वप्रथम 'भरतमुनि' ने ही अपने ग्रंथ में दी। भरत में प्रधान रस चार बताए हैं- 'शृंगार', 'रौद्र', 'वीर' और 'वीभत्स'। इन्हीं से क्रमशः हास्य, करूण, अद्भूत एवं भयानक रसों की उत्पत्ति होती है।

भरत मुनि के 'नाट्य शास्त्र' के छठे व सातवें अध्याय में 'रस', भावों, विभावों, अनुभावों तथा संचारियों पर विचार हुआ है। भरत का ग्रंथ चद्यपि मूल रूप में नाट्य के संदर्भ में है इसलिए उन्होंने रसचर्चा नाटक की पृष्ठभूमि में की है, तथापि संगीत और काव्य में भी उसकी चर्चा की है। रसों का प्रमुख आधार भाव ही है। इन भावों को स्थायी भावों की संज्ञा दी गई है। भरत में आठ स्थायी भाव तथा उसके अनुरूप आठ रस बताए हैं। अभिनव गुप्त ने सर्वप्रथम शांतरस को स्थान देकर नवरस कल्पना की।

**'संगीत एवं रस'**

संगीत में भी केवल शृंगार, करूण और शांत इन चार रसों में उपयुक्त नव रसों का समावेश माना गया है। हमारे प्राचीन शास्त्रकारों ने सप्त स्वरों के रस इस प्रकार बताए हैं:- विद्वानों के अनुसार सा रे-वीर, रौद्र तथा अद्भुत रसों के पोषक हैं, ध-वीभत्य तथा भयानक रसों का पोषक है; ग नि- करुण रस का पोषक है और म प हास्य व शृंगार रसों का पोषक है।

पंडित भातखण्डे जी ने हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में स्वरों के अनुसार रागों के तीन वर्ण नियत किए है और उन तीन वर्गों में रस का समावेश का भी सुझाव दिया है। भातखण्डे जी के अनुसार, रे ध कोमल वाले संधि प्रकाश रागों में शांत व करुण रस, रे ध तीव्र वाले रागों के शृंगार, रस, ग नि कोमल वाले रागों में वीर रस। प्राचीन ग्रंथकारों ने एक स्वर से ही एक रस की सृष्टि बताई हैं किंतु वास्तव में केवल एक ही स्वर से किसी विशेष रस की उत्पत्ति होना सम्भव नहीं है।

अनेक रागों से विभिन्न रसों की सृष्टि होती है। एक स्वर अपने अन्य सहयोगी

स्वरों के साथ मिलकर ही रसोत्पत्ति करने में सफल होता है। शास्त्रीय स्वर योजना के अनुरूप निश्चित ऋतु में योग्य वातावरण को देखकर श्रोताओं की मनोभावना को समझते हुए कोई राग जब किसी गायक द्वारा गाया या बजाया जाता हैं तथा उसके गीत का काव्य भी उस रस के अनुकूल हो तो रस की उत्पत्ति होती है। स्वर और शब्दों से ही गीत का निर्माण होता है और जब गीत में स्वर ही न हों तो शब्दों की एक नीरस रचना मात्र रह जाएगी जो बिना स्वरों की सहायता के आवश्यक रस की सृष्टि करने में असफल रहेगी।

**चित्रपट संगीत के गीतों में रस**

भारतीय फिल्म संगीत का युग 1931 में सर्वप्रथम सवाक फिल्म 'आलम आरा' से आरम्भ हुआ। चित्रपट संगीत शास्त्रीय संगीत से बिलकुल भिन्न है। चित्रपट संगीत के गीतों में इतनी क्षमता होती है कि वह तीन या चार मिनट में ही सुनने वाले को आनन्द की आनुभूति करवा लेते हैं। जहां दूसरी और शास्त्रीय संगीत का आनन्द लेने के लिए एक व्यक्ति में ठहरव और शास्त्रीय ज्ञान का पता नितांत आवश्यक है। वही चित्रपट संगीत के गीतों में कम समय में ही एक व्यक्ति आनन्द की प्राप्ति कर सकता है। चित्रपट संगीत में भी अनेक गीतों में राग और रस की सुन्दर अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। यदि हम पुराने गीतों को सुने तो हमें वह अनुभव आवश्यक होगा की उन गीतों में राग और अनेक रस व्यक्ति होते हैं। लता मंगेश्कर, मोहम्मद रफी, आशा भोसलें, मुकेश आदि सभी प्रसिद्ध गायकों के गीत सुनकर एक श्रोता अत्यंत सुखद आनन्द का अनुभव करता है। अनेक संगीतकारों ने राग और रस को आधार बनाकर अपने गीतों की रचना की है।

विभिन्न रसों के अनुसार चित्रपट संगीत के गीतों के उदाहरण:-

➔ श्रृंगार रस के गीत

- लागा चुनरी में दाग-गायक मन्ना डे (फिल्म दिल ही तो है)
- पिया बावरी - गायिका आशा भोसले (खूबसूरत)
- सुनो सजना पपिहै ने - गायिका लता मंगेश्कर (फिल्म आए दिन बहार के)

➔ करुण रस के गीत

- बइयाँ ना घरो ओ सजना - गायिका लता मंगेश्कर (फिल्म-दस्तक)

- रस्मे उल्फत को निभाए – गायिका लता मंगेश्कर (फिल्म- दिल की राहें)

➔ शांत रस के गीत

- रात का समय झूमे चंद्रमा – गायिका लता मंगेश्कर (फिल्म-ज़िद्दी)
- ये शाम मस्तानी – गायक किशोर कुमार (फिल्म-कटी पतंग)

➔ वात्सल्य रस के गीत

- बड़ा नटखट है रे कृष्ण कन्हईया – गायिका लता मंगेश्कर (फिल्म-अमर प्रेम)

➔ विरह रस के गीत

- साथी रे भूल ना जाना मेरा प्यार – गायिका आशा भोंसले (फिल्म-कोतवाल साहब)
- ऐ री सखी मैं आज तो पे अंग अंग वार दूँ – गायक शंकर महादेवन (फिल्म-बंदिश बैंडिटस)

अत: अंत में यह कहा जा सकता है कि भारतीय राग संगीत एवं चित्रपट संगीत में 'रस' पूर्ण रुप से विद्यमान है। रस से परिपूर्ण रचनाएँ ही श्रोताओं और गायकों को मंत्रमुग्ध करने में सफल रहती है राग और रस का एक अभिन्न सम्बन्ध देखा जा सकता है। चित्रपट संगीत में भी रस पूर्णरूप से विद्यमान है।

**संदर्भ सूची:-**


- 'संगीत एवं रस', पृष्ठ 54 से 69 संगीत दर्शन विजयलक्ष्मी जैन
- 'संगीत और रस', पृष्ठ 548 से 550 संगीत विशारद बसन्त
- 'राग और रस', पृष्ठ 32 से 34 क्रमिक पुस्तक मालिका, पं.वी. एन भातखण्डे
- शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत, पृष्ठ 169 से 170 'राग परिचय' भाग-1 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
- रस की परिभाषा, भेद प्रकार और उदाहरण www.hindivibhag.com.